Dear Parents,

Session 2018-2019 is progressing quite well. We just had our 'Orientation Session' with Primary, Middle and Secondary schoolers parents and it was heartening to see your approach, co-operation and support. APS family extends gratitude for it.

A warm welcome to students who have joined our school this session. We stand committed to providing quality education to our children. The teachers follow a detailed plan of instruction that is guided by CBSE and AWES. SAMC is our pillar of strength as our teachers focus on holistic development of our students. We shall certainly continue to implement our 'Systems Approach' to support all students by using interventions to help each child make academic progress. Progress is best assured when student, parents and school are working towards same goal. It's like when every player is an active member, the team is sure to be the best and everyone is a winner. So let's strive to be all winners!

For Summer Break Assignments, practice sheets are devised to ensure revisions for coming assessment. Kindly go to the website: www.apsbinnaguri.org and follow these steps for the same

Steps to download:

i. Browse the website→ Home page (first page of the website)
ii. Then check the Bulletin Board→ link will be available.

OR

Home Page→ Click on 'APS News' option→ Choose Holiday Homework option from the dropdown menu.

We would also seek your co-operation to help lift up academics. We would welcome parents to offer their names for substitute facilitators/ teachers, judges for events round the year. Kindly e-mail at apsbinnaguri1@gmail.com or give your details at Front Desk.

We truly believe that an entire community is needed to empower our students to become successful citizens. I look forward to a great year and working with such an amazing community.

Awaiting your constructive suggestions.

आर्मी पब्लिक स्कूल,बिन्नागुड़ी,

प्रथम इकाई परीक्षा अभ्यासपत्र : (2018-19)

विषय:- हिंदी कक्षा:- 12वीं

प्रश्न 1.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

खेल हमारे शरीर की सुगठित बनाते है तथा हमारी कार्य-क्षमता को बढ़ाते हैं | जीवनभर अगर युवक बने रहना है तो खेलों से अच्छा कोई साधन नहीं है | खेलकूद हमारे अंदर मिलकर काम करने की भावना का विकास करते हैं | किसी टीम की विजय में उसके सभी खिलाड़ियों का योगदान होता है | इससे सामूहिकता के साथ काम करने की आदत विकसित होती है | इस प्रकार खेल-कूद हमारे अंदर संगठन और सहयोग, परस्पर विशवास, अनुशासन और आज्ञाकारिता, साहस, सहनशीलता, आदि अच्छे गुणों का विकास करते हैं | हारनेवाला खिलाड़ी मुस्कराकर विजयी खिलाड़ी को बधाई देता है और आगे से अच्छे-से-अच्छा खेलने का संकल्प करता है | खेल हमें विपरीत परिस्थितियों के आगे न झुकने की प्रेरणा देते हैं |

(क). खेल हमारे शरीर पर क्या प्रभाव डालते हैं ?

(ख). खेलकूद हमारे अंदर कैसी भावना का विकास करते हैं ?

(ग). खेलकूद हमारे अंदर किन श्रेष्ठ गुणों का विकास करते हैं ?

(घ). खेल में हारनेवाला खिलाड़ी क्या करता है ?

(ङ). गद्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है ?

प्रश्न 2.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर में लिखिए:

संकटों से वीर घबराते नहीं आपदाएँ देख छिप जाते नहीं | लग गए जिस काम में, पूरा किया, काम करके व्यर्थ पछताते नहीं | हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता, कर्मवीरों को न इससे वास्ता | बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले, कठिनतर गिरि-श्रृंग ऊपर चढ़ चले |	कठिन पथ को देख मुसकाते सदा, संकटों के बीच वे गाते सदा | है असंभव कुछ नहीं उनके लिए, सरल-संभव कर दिखाते वे सदा | यह 'असंभव' कायरों का शब्द है, कहा था नेपोलियन ने एक दिन | सच बताऊँ ज़िंदगी ही व्यर्थ है, दर्प बिन, उत्साह बिन, औ शक्ति बिन |

क).काव्यांश में वीरों व कायरों की किन विशेषताओं पर बल दिया गया है ?

(ख).कर्मवीरों को किस बात से कोई लेना-देना नहीं होता ?

(ग). नेपोलियन ने क्या कहा था ?

(घ). कवि के अनुसार किसके-किसके बिना मानव जीवन व्यर्थ है ?

(ङ). काव्यांश का शीर्षक लिखें |

प्रश्न 3.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

राष्ट्रीय एकता एक प्रबल शक्ति है | यह वीरता और बलिदान के कार्यों को बढ़ावा देती है और जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है | यह देशवासियों को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है | संसार के लोगों ने राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित होकर अपूर्व उन्नति की है | राष्ट्रीय एकता जनता को व्यक्ति और समाज दोनों रूपों में प्रोत्साहन और प्रेरणा देती है | जब महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन आरंभ किया तो समूचा राष्ट्र एक भावना से गाँधी जी के साथ हो लिया | एकता और संगठन की भावना जागृत करने के लिए उन्होंने नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों पर आधारित अनेक रचनात्मक कार्यक्रम आरंभ किए | आजादी के बाद समस्त भारत भावनात्मक एकता के सूत्र में बँधा है | चीनी अतिक्रमण इसका जीता-जागता प्रमाण पस्तुत करता है | इस कठिन समय में भारतवासियों की भावनात्मक एकता एकदम व्यावहारिक एकता में परिवर्तित हो गई और आक्रांता चीन की चुनौती का पूरे राष्ट्र ने ललकार के साथ उत्तर दिया | इस समय हमारे देश को उसी प्रकार की भावनात्मक एकता की आवश्यकता है |

(क). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए |

(ख). राष्ट्रीय एकता देशवासियों को क्या प्रेरणा देती है?

(ग). गाँधी जी ने किस भावना को जागृत करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम आरंभ किए?

(घ). किसके बल पर भारतवासियों ने चीनी आक्रमण का सामना किया?

(ङ). वर्तमान समय में देश को किस प्रकार की एकता की आवश्यकता है ?

प्रश्न 4.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में लिखिए:

चौड़ी सड़क गली पतली थी दिन का समय घनी बदली थी रामदास उस दिन उदास था अंत समय आ गया पास था उसे बता यह दिया गया था, उसकी हत्या होगी | धीरे-धीरे चला अकेले सोचा साथ किसी को ले ले फिर रह गया, सड़क पर सब थे सभी जानते थे यह, उस दिन उसकी हत्या होगी | खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर	दोनों हाथ पेट पर रख कर साढ़े कदम रख करके आए, लोग सिमट कर आँख गड़ाए लोग देखने उसको, जिसकी तय था हत्या होगी | निकल गली से तब हत्यारा आया उसने नाम पुकारा हाथ तौलकर चाकू मारा छूटा लोहू का फव्वारा कहा नहीं था उसने आखिर, उसकी हत्या होगी ?

(क). रामदास की उदासी का क्या कारण था ?

(ख). वह अपने साथ किसी को लेते-लेते क्यों रुक गया ?

(ग). सड़क पर हत्या होने का क्या मतलब है ?

(घ). जनता के सामने एक आम आदमी की हत्या किस बात का सूचक है ?

(ङ). काव्यांश में कानून व्यवस्था की पोल किस तरह खोली गई है ?

प्रश्न 5.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

जीवन रुकने का नहीं चलने का नाम है ? कुछ लोग असफलता की अवस्था में निराश होकर अपने उत्साह का दामन छोड़ बैठते हैं | वे भूल जाते हैं कि परिश्रम एवं प्रयत्न में भाग्य को बदल देने की भी क्षमता होती है | आलसी बनकर रोना-धोना व्यर्थ है | मनुष्य इस संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है | अत: उसे अपना जीवन सार्थक बनाने के लिए आशा का सहारा लेना चाहिए | आलसी बनकर समय व्यर्थ बिताना अपने साथ अन्याय करना है | हमें अपने साधनों एवं क्षमताओं का प्रयोग कर प्रगति के पथ पर बढ़ना चाहिए | हमें भावानात्मक कार्य की अपेक्षा रचनात्मक कार्य करने चाहिए | दुःख में घबराना कायरता का प्रतीक है | हर शाम सूरज को ढलना ही है | रात को आना ही है, तो क्या अँधेरे में हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहा जाए, या उठकर एक दीपक जला लें | सूर्य के समक्ष दीपक की क्या बिसात | पर एक दीपक भी पर्याप्त है एक घर को रोशन कर देने के लिए |

(क). असफलता की स्थिति में व्यक्ति का क्या कर्तव्य होना चाहिए ?

(ख). प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए क्या आवश्यक है ?

(ग). लेखक ने अपने साथ अन्याय करना किसे माना है ?

(घ). 'एक दीपक भी पर्याप्त है घर को रोशन करने के लिए'- पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

(ङ). जीवन किसका नाम है ?

प्रश्न 6.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर में लिखिए:

जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं, घुटनों के बल सरक-सरककर बड़े हुए हैं, परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए, जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए, हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में	हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हो मोद में ? षट्ऋतुओं का विविध दृश्य युत अदभुत क्रम है, हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है, शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चंद्रप्रकाश है | हे मातृभूमि, दिन में तरणि, करता तम का नाश है |

(क). मातृभूमि की गोद में हम किस तरह से बड़े हुए हैं ?

(ख). बाल्यकाल के बारे में कवि ने क्या कहा है ?

(ग). प्रस्तुत काव्यांश में किसकी महिमा गाई गई है ?

(घ).कवि ने किसकी तुलना मखमल से की है ?

(ङ). चन्द्रमा और सूर्य मातृभूमि पर क्या प्रभाव डालते है ?

प्रश्न 7.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

भारत में ऋतुओं से संबंध रखनेवाले त्योहारों की कमी नहीं हैं | वसंत पंचमी, होली, श्रावण तीज, शरद पूर्णिमा, लोहड़ी, पोंगल, बैसाखी आदि त्योहार किसी-न-किसी रूप में सारे देश में मनाए जाते हैं | सभी जानते हैं कि इनका संबंध विशेष ऋतुओं से ही ही है | वसंत पंचमी और होली वासंती रंग और मस्ती के त्योहार हैं | श्रावण तीज मस्ती के प्रतीक झूलों का त्योहार है | शरद पूर्णिमा वर्षा ऋतु के बाद वायुमंडल और वातावरण की निर्मलता का संदेश देनेवाला त्योहार है | लोहड़ी और पोंगल शीत-ऋतु की भरपूरता में मनाए जानेवाले त्योहार हैं | इसमें रेवड़ी, मूँगफली , तिल-गुड़, घी-खिचड़ी आदि खाने की परंपरा है, वास्तव में यह सरदी से बचाव और स्वास्थ्य-सुधार का उपाय है; यद्यपि कुछ धार्मिक-आध्यात्मिक बातें, कथाएँ और परंपराएँ भी इनके साथ जुड़ गई हैं | बैसाखी गेहूँ की नई फ़सल आने और ऋतु-परिवर्तन की सूचना देनेवाला त्योहार है, जो पंजाब-हरियाणा जैसे कृषि-प्रधान प्रांतों में विशेष सज-धज तथा नृत्य-गान की मस्ती के साथ मनाया जाता है | इनके अतिरिक्त भी लोग ऋतुओं से संबंधित स्थानीय स्तर के त्योहार मानते हैं | सभी में मेल-मिलाप, आनंद-मौज की प्रधानता रहा करती है |

इस प्रकार भारत में पारिवारिक, सामाजिक संबंधों का महत्त्व बतानेवाले कुछ त्योहार भी बड़े चाव, बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं | रक्षाबंधन और भैया दूज यदि भाई-बहन के स्नेहपूर्ण रिश्ते को प्रकट करनेवाले हैं, तो करवा चौथ पति-पत्नी के पावन संबंधों को महत्त्व देनेवाला त्योहार है |

(क).भारत में ऋतुओं से संबंध रखनेवाले कौन-कौन से त्योहार हैं ?

(ख). शरद पूर्णिमा का त्योहार क्या संदेश देता है ?

(ग).भारत में पारिवारिक, सामाजिक संबंधों के महत्त्व को बतानेवाले त्योहार कौन-कौन से हैं ?

(घ).रक्षाबंधन और करवा चौथ किन संबंधों को प्रकट करनेवाले त्योहार हैं ?

(ङ).कृषि-प्रधान प्रांतों में कौन-सा त्योहार मनाया जाता है ?

प्रश्न 8.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में लिखिए:

मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ लेकिन मुझे फेंको मत ! क्या जाने कब इस दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाय	अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बड़े-बड़े महारथी अकेली-निहत्थी आवाज को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें तब मैं रथ का टूटा हुआ पहिया उसके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ	मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ लेकिन मुझे फेंको मत इतिहास की सामूहिक गति सहसा झूठी पड़ जाने पर क्या जाने सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले

(क). रथ का टूटा पहिया स्वयं को न फेंके जाने की सलाह क्यों देता है ?

(ख). दुरूह चक्रव्यूह का महाभारत के संदर्भ में क्या आशय है ?

(ग). कवि ने अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों बताया है ?

(घ). 'अकेली-निहत्थी आवाज' का क्या तात्पर्य है ?

(ङ). 'ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेना' का भाव स्पष्ट करें |

प्रश्न 9.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

भिखारी की भाँति गिड़गिड़ाना प्रेम की भाषा नहीं है | यहाँ तक कि मुक्ति के लिए भगवान की उपासना करना भी अधम उपासना में गिना जाता है | प्रेम कोई पुरस्कार नहीं चाहता | प्रेम में आतुरता नहीं होती | प्रेम सर्वथा प्रेम के लिए ही होता है | भक्त इसलिए प्रेम करता है कि बिना प्रेम किए वह रह ही नहीं सकता | जब हम किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं तो उस दृश्य से हम किसी फल की याचना नहीं करते और न वह दृश्य ही हम से कुछ चाहता है; तो भी वह दृश्य हमें बड़ा आनंद देता है | वह हमारे मन को पुलकित और शांत कर देता है और हमें साधारण संसारिकता से ऊपर उठाकर एक स्वर्गीय आनंद से सराबोर कर देता है | इसलिए प्रेम के बदले कुछ माँगना प्रेम का अपमान करना है | प्रेम करना नंगी तलवार की धार पर चलने जैसा है क्योंकि स्वार्थ के लिए, दिखावे के लिए तो सभी प्रेम करते है, उसे निभाते नहीं | वे पाना चाहते है, देना नहीं | वे वस्तुतः प्रेम शब्द को कलंकित करते हैं |

(क). प्रेम में आतुरता होने से क्या अभिप्राय है ?

(ख). प्रकृति-प्रेम में प्रकृति और दर्शक के प्रेम-संबंध कैसे होते हैं ?

(ग). प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान क्यों बताया गया है ?

(घ). कैसे लोग प्रेम को कलंकित करते हैं ?

(ङ). भक्त और भगवन के बीच कैसा प्रेम होना चाहिए ?

प्रश्न 10.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर में लिखिए:

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के |	पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,	आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली |	बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की |
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के |	बरस बाद सुधि लीन्हीं –
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ||	बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की ||

(क).'पाहुन' किसे कहा गया है और क्यों ?

(ख). मेघ किस रूप में और कहाँ आए ?

(ग). मेघों के आने पर गाँव में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देने लगे ?

(घ). बूढ़ा पीपल किसके रूप में है ? उसने क्या किया ?

(ङ).'लता' कौन है ? उसने क्या शिकायत की ?

प्रश्न 11.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

बोलने का विवेक, बोलने की कला और पटुता व्यक्ति की शोभा है, उसका आकर्षण है | सुबुद्ध वक्ता अपारजनसमूह का मन मोह लेता है, मित्रों के बीच सम्मान और प्रेम का केंद्र-बिंदु बन जाता है | जो लोग अपनी बात को राई का पहाड़ बनाकर उपस्थित करते हैं, वे एक ओर जहाँ सुनने वाले के धैर्य की परीक्षा लिया करते हैं, वहीं अपना और दूसरे का समय भी अकारण नष्ट किया करते हैं | विषय से हटकर बोलने वालों से, अपनी बात को अकारण खींचते चले जाने वालों से तथा ऐसे मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करने वालों से जो उस प्रसंग में ठीक ही न बैठ रहे हों, लोग उब जाते हैं | वाणी का अनुशासन, वाणी का संयम और संतुलन तथा वाणी की मिठास ऐसी शक्ति है जो हर कठिन स्थिति में हमारे अनुकूल ही रहती है, जो मरने के पश्चात् भी लोगों की स्मृतियों में हमें अमर बनाए रहती है | हाँ, बहुत कम बोलना या सदैव चुप लगाकर बैठे रहना भी बुरा है | यह हमारी प्रतिभा और तेज को कुंदकर देता है | ऐसा व्यक्ति गुफा में रहने वाले उस व्यक्ति की तरह होता है, जिसे बहुत दिनों के बाद प्रकाश के आने पर भय लगने लगता है | अतएव कम बोल, सार्थक और हितकर बोलो यही वाणी का तप है |

(क). इस गद्यांश में व्यक्ति की शोभा और आकर्षण किसे बताया गया है और क्यों ?

(ख). किस प्रकार का बोलना पसंद नहीं किया जाता है ?

(ग). किस प्रकार की भाषा हमें जीवन में लोकप्रिय और जीवन के बाद अमर बनाए रहती है ?

(घ). बहुत कम बोलना भी अच्छा क्यों नहीं है ?

(ङ). वाणी का तप किसे कहा गया है और क्यों ?

प्रश्न 12.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में लिखिए:

ले चल माँझी मझधार मुझे, दे-दे बस अब पतवार मुझे |	मैं हूँ अबाध, अविराम अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं |
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रह कर प्यार मुझे ||	मैं नहीं अरे ऐसा राही, जो बेबस-सा मन मार चलूँ ||
मत रोक मुझे भयभीत न कर, मैं सदा कँटीली राह चला |	कब रोक सकी मुझको चितवन, मदमाते कजरारे घन की,
पथ-पथ मेरे पतझरों में नव सुरभि भरा मधुमास पला |	कब लुभा सकी मुझको बरबस, मधु-मस्त फुहारें सावन की |
फिर कहाँ डरा पाएगा यह पगले जर्जर संसार मुझे |	जो मचल उठें अनजाने ही अरमान नहीं मेरे ऐसे-
इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे ||	राहों को समझा लता हूँ सब बात सदा अपने मन की
मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ, उस पार चलूँ	इन उठती-गिरती लहरों का कर लेने दो श्रृंगार मुझे,
मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा जी चाहे जीतूँ, हार चलूँ |	इन लहरों के टकराने पर आता रह-रह कर प्यार मुझे ||

(क).'अपने मन का राजा' होने के दो लक्षण कविता से चुनकर लिखिए |

(ख). किस पंक्ति का आशय है- कई पतझड़ को भी बसंत मान लेता है ?

(ग). कविता का केंद्रीय भाव दो-तीन वाक्यों में लिखिए |

(घ). कविता के आधार पर कवि-स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए |

(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'कब रोक सकी मुझको चितवन, मदमाते कजरारे घन की |'

प्रश्न 13.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

सत्य के अनेक रूप होते है, इस सिद्धांत को मैं बहुत पसंद करता हूँ | इसी सिद्धांत ने मुझे एक मुसलमान को उसके अपने दृष्टिकोणसे और ईसाई को उसके स्वयं के दृष्टिकोण से समझना सिखाया है | जिन अंधों ने हाथी का अलग-अलग तरह से वर्णन किया वे सब अपनी दृष्टि से ठीक थे | एक-दूसरे की दृष्टि से सब गलत थे, और जो आदमी हाथी को जानता था, उसकी दृष्टि से सही भी थे और गलत भी थे |

जब तक अलग-अलग धर्म मौजूद हैं, तब प्रत्येक धर्म को किसी विशेष वाह्य चिह्न की आवश्यकता हो सकती है | लेकिन जब बाह्य चिह्न केवल आडंबर बन जाते हैं अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्मों से अलग बताने के काम आते हैं, तब वे त्याज्य हो जाते हैं |

धर्मों के भ्रातृ-मंडल का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह हिंदू को अधिक अच्छा हिंदू, एक मुसलमान को अधिक अच्छा मुसलमान और एक ईसाई को अधिक अच्छा ईसाई बनाने में मदद करे | दूसरों के लिए हमारी प्रार्थना वह नहीं होनी चाहिए- ईश्वर, तू उन्हें वही प्रकाश दे जो तूने मुझे दिया है, बल्कि यह होनी चाहिए – तू उन्हें वह सारा प्रकश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है |

(क). 'अंधे और हाथी' का उदाहरण क्यों दिया गया है ?

(ख). धर्म के बाह्य चिह्नों को क्यों त्याग देना चाहिए ?

(ग). किसी भी धर्म के अनुयायी को उसी के दृष्टिकोण से देखने की समझ किस सिद्धांत के कारण पैदा हुई ?

(घ). हमें ईश्वर से क्या प्रार्थना करनी चाहिए ? **(ङ).** इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए |

प्रश्न 14.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में लिखिए:

पथ बंद है पीछे अचल है पीठ पर धक्का प्रबल	आराम संभव है नहीं जीवन सतत संग्राम है
मत सोच बढ़ चल तू अभय, ले बाहु में उत्साह-बल	बढ़ चल मुसाफ़िर धर कदम, आगे कदम, आगे कदम
जीवन-समर के सैनिकों संभव असंभव को करो	ऊँचे हिमानी श्रृंग पर, अंगार के भ्रू-भृंग पर
पथ-पथ निमंत्रण दे रहा आगे कदम, आगे कदम	तीखे करारे खंग पर आरंभ कर अद्भुत सफर
ओ बैठने वाले तुझे देगा न कोई बैठने	ओ नौजवाँ, निर्माण के पथ मोड़ दे, पथ खोल दे
पल-पल समर, नूतन सुमन-शय्या न देगा लेटने	जय-हार में बढ़ता रहे आगे कदम, आगे कदम

(क). इस काव्यांश में कवि किसे प्रेरणा दे रहा है और क्या ?

(ख). किस पंक्ति का आशय है – जीवन के युद्ध में सुख सुविधाएँ चाहना ठीक नहीं ?

(ग).अद्भुत सफर की अद्भुतता क्या है ?

(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'जीवन सतत संग्राम है|'

(ङ). कविता का केन्द्रीय भाव लिखे |

प्रश्न 15.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें -

तुम अपने जीवन के आगे काल्पनिक प्रश्न चिह्न क्यों लगाते हो ? जो उपस्थित नहीं उससे भय क्या ? अगर तुम्हारी कल्पना में शंकाओं एवं संदेहों के आगे का मार्ग है तो उसे बंद कर दो और दूसरी और की खिड़की खोल लो, जिसमें से उत्साह, आशा व सफलता की बयार आती है | भिखमंगों से डर कर क्या तुमने रोटी पकाना छोड़ दिया है ? मृत्यु के डर से यदि तुम जीना नहीं छोड़ते तो कठिनाइयों के डर से कार्य न करना कौन-सी बुद्धिमत्ता है ? उस नाविक को देखो जो समुद्र में नाव खेने चला है, उसे मालूम है कि समुद्र की लहरों के थपेड़ों से उसकी नाव चकनाचूर हो सकती है, आँधी से पाल तार-तार हो सकती है, मस्तूल गिरकर टूट सकता है, पर इन सबसे घबराकर क्या वह समुद्र में जाना छोड़ दे ? समुद्र कितना ही विशाल क्यों न हो, पर उसकी विशाल साहसी भुजाओं का मुकाबला करने की शक्ति उसमें नहीं है, इसलिए तुम भी संसार की कर्मस्थली में उतर जाओ, अन्यथा चिंता एवं निराश के सागर में डूब जाओगे |

(क). काल्पनिक प्रश्न-चिह्न से क्या तात्पर्य है ?

(ख). लेखक ने नाविक के दृष्टांत द्वरा क्या प्रेरणा दी है ?

(ग). लेखक ने मनुष्य को विपत्तियों से हतोत्साहित न होने के लिए कौन-कौन से दृष्टांत दिए हैं ?

(घ). समुद्र मनुष्य की शक्ति का मुकाबला करने में क्यों अक्षम है ? **(ङ).** इस गद्यांश के लीए उपयुक्त शीर्षक लिखिए ?

प्रश्न 16.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में लिखिए:

रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी ज़मीन, जिनका श्रम है;	सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल	
अब कौन उलट सकता स्वतंत्रता का सुसिद्धि, सीधा क्रम है	स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते है;
आजादी है अधिकार शोषणों की धज्जियाँ उड़ाने का	रोटी क्या ? ये अंबरवाले सारे सिंगार मिल सकते है	
गौरव की भाषा नई सीख, भिखमंगों की आवाज़ बदल,	

(क). आज़ादी क्यों आवश्यक है ?

(ख). सच्चे अर्थों में रोटी पर किसका अधिकार है ?

(ग). कवि ने किन पंक्तियों में गिड़गिड़ाना छोड़कर स्वाभिमानी बनने को कहा है ?

(घ). कवि व्यक्ति को क्या परामर्श देता है ?

(ङ). आज़ाद व्यक्ति क्या कर सकता है ?

****